प्राक्कथन

भूमंडलीकरण महज राजनीतिक या सामाजिक मुद्दा नहीं रहा, अपितु इसने तमाम संस्कृतियों, विचारधाराओं एवं कला-साहित्यिक रचनाओं को प्रभावित ही नहीं; उनका विखंडन और पुनर्निर्माण भी किया। संकलनत्रय की अवधारणाएँ टूट गई, कलाकार और लेखक अप्रासंगिक हो गए। रचना की अभिव्यक्ति के लिए भाषा को खुद मीडिया और बाज़ार के अनुकूल बदलना पडा। वही साहित्य उतराधुनिक कहा जाता जो मानव-सभ्यता की तीसरी लहर से मेल खानेवाला हो। साहित्य का कथ्यपक्ष ही नहीं, उसकी अभिव्यक्ति भी मीडिया वर्चस्व से समझौता करती दिखाई देती है। यदि पाश्चात्य साहित्य में उत्तर उपनिवेशवादी संवेदना का प्रभाव बीसवीं सदी के साठवें दशक से दृष्टिगत होता तो हिन्दी उपन्यास में उत्तर उपनिवेशवाद का लक्षण पिछली सदी के अंतिम दशकों में प्रकट होते हैं।

समकालीन हिन्दी उपन्यास की उत्तर औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य में कई आलोचनात्मक टिप्पणियाँ उपलब्ध हैं। इनमें ज्यादात्तर अध्ययन नारी विमर्श, उतराधुनिक विमर्श, रचनात्मक तत्व, बाज़ार तंत्र आदि आयामों पर हुआ है। 'हिन्दी उपन्यास समकालीन विमर्श' (डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी), 'उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श' (डॉ. सुधीश पचौरी), 'उपन्यास का पुनर्जन्म' (डॉ. परमानंद श्रीवास्तव), 'उपन्यासः

समय और संवेदना' (विजय बहादूर सिंह), 'इतिवृत्त संरचना और संरूप' (रोहिणी अग्रवाल) आदि इसमें प्रमुख हैं। निर्मल वर्मा के उपन्यासों का अध्ययन उत्तर औपनिवेशिक संदर्भ पर किया है। पर उत्तर औपनिवेशिकता और समकालीन हिन्दी उपन्यास की केंद्रक प्रवृत्ति को आमने-सामने रखकर देखने का कम प्रयास ही हुआ है।

बहुचर्चित रचनाकार सुरेन्द्र वर्मा को विशेष विषय के तहत प्रस्तुत करके निम्नलिखित अध्ययन हुए हैं - 'समकालीन हिन्दी उपन्यास और सुरेन्द्र वर्मा' (डॉ. संध्या) में सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में अभिव्यंजित महानगरीय सभ्यता, कला एवं कलाकार का संघर्ष एवं नारी चेतना का विश्लेषण हुआ है। 'सुरेन्द्र वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' (डॉ. भानुभाई रोहित) में उसके रचनात्मक व्यक्तित्व का विश्लेषण विभिन्न साहित्यिक विधाओं के आधार पर अभिव्यंजित है। 'नाटककार सुरेन्द्र वर्मा' (डॉ. अशोक पटेल) में सिर्फ नाटकों का विश्लेषण विस्तार से हुआ है।

'आजकल' पत्रिका में (१९९४) शीला रजवार ने 'उपन्यास में नाटक' आलेख में 'मुझे चाँद चाहिए' का अध्ययन व्यक्ति चेतना के आधार पर किया है। इसी अंक में आलोक श्रीवास्तव द्वारा सुरेन्द्रवर्मा से हुई भेंटवार्ता भी आयी है। इनमें श्रीवास्तवजी ने कलाकार के अंतर्द्वन्द्वों पर प्रकाश डाला है।

उपर्युक्त अध्ययन में सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों का अध्ययन नारी विमर्श, रचनाकार का द्वन्द्व, रचनात्मकता आदि आयामों पर हुआ है। पर सुरेन्द्र वर्मा की औपन्यासिक चेतना को उत्तर औपनिवेशिकता के धरातल पर विश्लेषित करने का

सही प्रयास नहीं दृष्टिगत होता। अतः 'सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासः उत्तर औपनिवेशिक संदर्भ में' - इस अध्ययन के दौरान उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त उत्तर औपनिवेशिक संवेदनाओं को पहचानने का प्रयास किया गया है। अध्ययन के लिए प्रतिदर्श के तौर पर सुरेन्द्र वर्मा के चर्चित उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' का चयन हुआ है। इसका एक कारण यह है कि इस उपन्यास की रचना उस संक्रमणकाल पर हुई है जब आधुनिकता को विस्थापित कर उत्तरआधुनिकता की संवेदना भारतीय साहित्य में फैलने लगी थी। शोध की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण होंगेः

१. उत्तर औपनिवेशिकता : अभिलक्षण और आयाम।

२. औपनिवेशिक सौंदर्य बोध।

३. नारी विमर्श के बदलते स्वरूप।

४. उत्तर औपनिवेशिक सौंदर्यबोध।

५. उत्तर औपनिवेशिक भाषा।

'उत्तर औपनिवेशिकता : अभिलक्षण और आयाम' शीर्षक अध्याय में उत्तर औपनिवेशिकता संबन्धी विभिन्न अवधारणाओं और परिभाषाओं की खोज और विश्लेषण करने का प्रयास किया जाएगा। इसके निष्कर्षों के आधार पर उत्तर औपनिवेशिकता के स्वरूप और प्रमुख अभिकल्प लक्षणों की पहचान की जाएगी। साथ ही, इन अभिलक्षणों को लेकर समसामयिक हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन

करने का प्रयास किया जाएगा। सुरेन्द्र वर्मा की रचनाधर्मिता को आलोकित करना भी इसका उद्देश्य होगा। प्रतिदर्श के तौर पर सुरेन्द्र वर्मा कृत 'मुझे चाँद चाहिए' का चयन किया जाएगा।

दूसरे अध्याय का लक्ष्य सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में अभिव्यक्त औपनिवेशिक सौन्दर्यबोध का अध्ययन करने का ध्येय होगा। कृषक-संस्कृति द्वारा प्रतिष्ठित कला और सौदर्य संबन्धी मान्यताओं को उपनिवेशवाद ने किस तरह विचलित और विस्थापित किया, उस पर दृष्टि डाली जाएगी। कला और कलाकार का द्वन्द्व, रचना प्रक्रिया, मशीनीकरण का प्रभाव कलाक्षेत्र में प्रशिक्षण की भूमिका आदि विभिन्न प्राचलों पर 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में अभिव्यक्त औपनिवेशिक सौन्दर्यबोध पर प्रकाश डाला जाएगा।

अध्ययन के तीसरे चरण में उपन्यास में अभिव्यक्त औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक नारी संबन्धी अवधारणाओं का विश्लेषण किया जाएगा। सबसे पहले औपनिवेशिक नारी विमर्श और उसकी प्रकृति को निर्धारित करने का प्रयास होगा। उक्त उपन्यास के आधार पर उपनिवेशवाद से नारी के जीवन पर हुए बदलावों का संकेत किया जाएगा। आज, उत्तर औपनिवेशिकता द्वारा निर्मित नारी संबन्धी अवधारणाएँ, नारी-मुक्ति की चेतना, वैयक्तिक जीवन एवं कलाक्षेत्र में नारी की भूमिका आदि आयामों पर विश्लेषण किया जाएगा। इस अध्ययन के दो आयाम हैं - गैर औपनिवेशवादी नारी विमर्श और वृद्धपूँजीवाद के संदर्भ में नारी विमर्श।

वृद्धपूंजीवाद में नारी, पुरुष के समकक्ष सक्रिय दिखाई पडती है जिसका असर व्यक्ति जीवन और कलाक्षेत्र में प्रकट होगा।

अगले चरण में उत्तर औपनिवेशिक सौन्दर्यबोध और कला के प्रतिमानों पर विचार किया जाएगा। 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास के दौरान साहित्य या कला की उत्तर औपनिवेशिक प्रवृत्तियों पर दृष्टि डाली जाएगी। सभ्यता की तीसरी लहर ने कला के माध्यम (medium) पर जो असर डाला है, उस पर विचार किया जाएगा। बाज़ारीकरण, उपभोक्तावाद, मीडिया-तंत्र, 'पॉपुलर कल्चर', फिल्म उद्योग, विज्ञापन आदि ने साहित्य और कला के क्षेत्र में जिन प्रतिमानों को रखा है उन पर प्रकाश डाला जाएगा। 'मुझे चाँद चाहिए' के आधार पर कला की रचना-प्रक्रिया, कला और कलाकार का द्वन्द्व, कला का क्षण, कला और मीडिया, कला के बाज़ारीकरण की संवृद्धि, बहुआयामी कला प्रारूपों द्वारा इसका समर्थन आदि आयामों को आलोकित किया जाएगा।

अंतिम चरण में उत्तर औपनिवेशिकता से रूपायित साहित्यिक भाषा पर विचार करना होगा। दार्शनिक जॉक देरिदा के भाषिक दर्शन ने संरचनावाद की समाप्ति की है। उत्तर संरचनावादी चिंतन के सामाजिक, पारिवारिक एवं राजनीतिक प्रतिमानों पर ही नहीं साहित्यिक प्रतिमानों पर प्रश्नचिह्न लगाया है। देरीदा के अलावा जेमसन, पाल डी. मान, रोलांड बार्थ आदि भाषावैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों के विचारों के आधार पर भी 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास की अभिव्यक्ति और शैली का अनुशीलन किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध-कार्य को मैं ने संत थॉमस कॉलेज, पाला के हिन्दी विभाग के सहआचार्य डॉ. सी.के. जेम्स के निर्देशन में संपन्न किया है। उन्होंने अपने अध्ययनशील और चिंतनशील विचारों से बहुमूल्य सुझाव देकर इस शोध-प्रबंध को साकार बनाने का उदार एवं प्रतिभासंपन्न मार्गदर्शन दिया है। इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य मानती हूँ। हिन्दी विभागध्यक्ष डॉ. के.एम. मैथ्यू जी का भी मैं विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य की पूर्ती के लिए समयोचित प्रोत्साहन दिया है। साथ ही, इस विभाग के अन्य शिक्षकों से भी मैं आभारी हूँ। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के.के. जॉस जी से मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य को संभव बनाने में समय-समय पर अनुकूल सलाह दी है। मेरे कॉलेज के अधिकारी लोगों और शिक्षकों ने भी मेरे इस शोध-कार्य को सार्थक बनाने हेतु मुझे प्रोत्साहन एवं सहारा दिये हैं। हमारे विभाग की भूतपूर्व अध्यक्षा डॉ. जयश्री. पी.डी. ने मेरी काफी मदद की है। इन सबको मैं तहे दिलसे आभार प्रकट करती हूँ।

सि. मरियट ए. तेराट्टिल